

मर्जी आपकी, शेयर बाजार में पैसा लगा आप बनना क्या चाहते हैं

हर्षद मेहता या वारेन बफेट

|| शेयर विशेषज्ञ कृष्णानंद नारनोलिया से हिन्दुस्तान की खास बातचीत

किसलय

हर्षद मेहता भारत के शेयर बाजार में एक ऐसा किरदार रहा है जिसका भूत आज भी गाहे बगाहे इस बाजार में दिख जाता है। खाकपति से अरबपति बने उस सटोरिये का तो अंत हो गया, लेकिन उसकी छाया से सेंसेक्स और निफ्टी आज भी नहीं उबर पाये हैं। 1979 में, स्टॉक एक्सचेंज की शुरुआत में, 100 से शुरू हुआ इंडेक्स आज 16,000 पहुंच गया। फिर, भी भारतीय निवेशकों के लिए शेयर बाजार महज किस्मत का खेल बना हुआ है। महज एक जुआ! जबकि, उधर, अमेरिकी शेयर दलाल वारेन बफेट आज दुनिया के सबसे

धनवान व्यक्ति बन चुके हैं। क्या भारत में ऐसी कोई संभावना है। क्या हर्षद को भुलाकर बफेट पर बहस शुरू की जा सकती है। कुछ ऐसे ही उद्देश्य लिये हमने रांची के निवेश विशेषज्ञ नारनोलिया से लंबी बातचीत की। शून्य से 15 हजार करोड़ के टर्न ओवर पर पहुंची कंपनी नारनोलिया सिक्युरिटीज लि. के सीएमडी कृष्णानंद नारनोलिया खुद में एक सक्सेस स्टोरी हैं। यहां हम उनसे बात करेंगे भारतीय शेयर बाजार की दशा-दिशा पर।



भारत के सेविंग्स का पांच

प्रतिशत इक्विटी मार्केट में निवेश को रहा है। पहले कभी, यह मात्र एक प्रतिशत हुआ करता था। अब, पूरे देश के इस पांच प्रतिशत निवेश में अधिकांश हिस्सा विकसित राश्यों से आता है, जैसे- महाराष्ट्र, गुजरात आदि से। इन विकसित राश्यों में सेविंग्स का 12-13 प्रतिशत इक्विटी में निवेश होता है।

उसकी तुलना में झारखंड-बिहार जैसे राश्यों में यह आंकड़ा मुश्किल से दो प्रतिशत होगा। और, इसमें भी खास बात यह कि स्पेकुलेशन बला बाजार पूरे देश की तुलना में यहां काफी ज्यादा है। इसके पीछे अज्ञानता मुख्य कारण है।

आपकी कंपनी नारनोलिया सिक्युरिटीज एक परामर्शदाता कंपनी है। किस तरह के परामर्श देते हैं आपलोग? आप कह सकते हैं कि हम अपने ग्राहकों के लिए कंफ्लिक्ट मनी मैनेजमेंट के सॉल्युशन देते हैं। हमलोग इन्वेस्टमेंट एडवाइजर हैं। ग्राहकों का मनी मैनेजमेंट से लेकर एडवाइजरी सर्विस तक देते हैं। ग्राहकों की क्षमता और जरूरत के अनुसार हम बताते हैं कि उन्हें इक्विटी में इन्वेस्ट करना चाहिए या डिबेंचर्स में या एफडी, कॉर्पोरेट डिबेंचर्स या गोल्ड में। भविष्य की अर्थव्यवस्था पर भी हमारे अपने आकलन चलते रहते हैं। उसी के अनुसार हम सलाह देते हैं ग्राहकों को।

आनेवाले दिनों में स्टॉक मार्केट के अलावा और कौन से निवेश के नए क्षेत्र उभर सकते हैं? भविष्य के लिए हम अपने ग्राहकों को इंटरनेशनल इक्विटी और कॉर्पोरेट डिबेंचर्स की ओर भी ध्यान दिला रहे हैं। जैसे आनेवाले दिनों में अफ्रीकी देशों में काफी विकास होनेवाला है। देश हो या विदेश, हमारे ग्राहक को पैसा कमाने से मतलब है। दूसरा है, कॉर्पोरेट डिबेंचर्स, जैसे, स्टेट, आयरन और, जिक आदि मिनेरल सेक्टर है। दुनिया भर के देशों के विकास में इन कॉर्पोरेट डिबेंचर्स की मुख्य भूमिका रहेगी। जाहिर है इसमें निवेश करनेवाला फायदे में रहेगा। इसके अलावा गोल्ड, रीयल एस्टेट और पेंडिंग्स में निवेश को भी काफी संभावनाएं हैं। भारतीय स्टॉक एक्सचेंजों में रीयल एस्टेट और आर्ट यानी पेंटिंग्स की जल्द ही एनलिस्टिंग होने वाली है।

हां, विदेशों में पेंडिंग्स में निवेश तो शुरू भी हो गए हैं। बड़ा अजीब सा लगता है सुनकर!

जब-जब बेईमानी काफी लोकप्रिय हो जाती है, ईमानदारी का वैल्यू काफी बहुत बढ़ जाता है। यह रेयर कॉमोडिटी हो जाती है।

हां, हमारे यहां अभी लोग भूख से संघर्ष कर रहे हैं। लेकिन, कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनकी सामान्य भौतिक जरूरतों पूरी हो चुकी हैं। पैसा पर्याप्त है। जाहिर है उनकी रुचि ऐसे क्षेत्र में बढ़ी है। लोग मोनोपॉलिसी से लेकर एमएफएच हूंस तक की पेंडिंग्स में निवेश करने लगे हैं। वे जानते हैं कि एक समय जब ये पेंडिंग्स बिकेगी तो उनकी कॉमोडिटी में भी अच्छी हिस्सेदारी मिल सकती है।

आप एक बड़ी इन्वेस्टमेंट एडवाइजरी कंपनी के सीएमडी हैं। आप नये प्रोएर एडवाइजरों को कोई सलाह देना चाहेंगे? तीन बिंदुओं पर मेरी सलाह है- नये शेयर-मार्केट एडवाइजरों को पर्याप्त अध्ययन और ज्ञान अर्जित करने के बाद ही इस धंधे में आना चाहिए। जो लोग पहले से इस धंधे में हैं, उन्हें ग्राहक-निवेशकों की रिस्क लेने की क्षमता और जरूरतों के अनुसार ही परामर्श देना चाहिए। और अंतिम लेकिन महत्वपूर्ण बात यह कि ये एडवाइजर अपनी सेवाओं के बदले जो शुल्क लेते हैं उसे कमोशन के तौर पर नहीं मेहनताना के रूप में स्वीकार करें। उन्हें देना चाहिए कि उनकी सेवाओं से ग्राहक को ज्यादा से ज्यादा लाभ मिले।

और अंत में आपकी इस अप्रत्याशित उन्नति का राज क्या है? इसके लिए मुझे अपने इतिहास में जाना होगा। दस साल पहले, मैं मगध स्टॉक एक्सचेंज में काम करता था। वहां एक वक्त ऐसा आया जब एक्सचेंज की आर्थिक हालत काफी खराब हो गई। बंद होने की आवाज थी। हमारा पूरा पैसा फंस चुका था। उस वक्त शेयर बाजार में काफी बेईमानी होती थी। लेकिन, मैं चाहता था कि मेरे ग्राहकों में मेरी गुडविल खराब न हो। इसलिए मैंने जैसे-तैसे अपने ग्राहक निवेशकों को पाई-पाई चुकायी। इसका, फायदा मुझे बाद में मिला। तभी से मैंने इस सूत्र को गांठ बना ली- जब-जब बेईमानी काफी लोकप्रिय हो जाती है, तो ईमानदारी का वैल्यू काफी बहुत बढ़ जाता है, यह रेयर कॉमोडिटी (बिस्स/माल) हो जाती है। आज जो कुछ भी हूँ इसी

हाल के वर्षों में शेयर व्यवसाय आम लोगों की पहुंच में दिखने लगा है। क्या कम पूंजीवाले लोग इस धंधे से वाकई मुनाफा कमा सकते हैं? और कैसे? इसके लिए कुछ गुर बताइये।

हां, यह सच है कि छोटे निवेशक अब काफी आने लगे हैं। लेकिन, वास्तव में जो लाभ उन्हें मिलना चाहिए, नहीं मिल पाता। उसके पीछे कारण है- जानकारी का अभाव। लोग इक्विटी का मायने तक नहीं समझते हैं। कोई खूब पैसा बनाया, उसे देखकर दूसरे भी निवेश करने पहुंच जाते हैं। लेकिन, जानकारी के अभाव में वे निवेशक की बजाय बन जाते हैं, जुआरी।

निवेशकों को आप जुआरी कह रहे हैं। इसका मतलब, शेयर बाजार जुआरियों का अड्डा..?

जी नहीं, ऐसी बात नहीं। दरअसल, सबसे पहले हमें इक्विटी अर्थात शेयर के मायने समझना जरूरी है। जब आप किसी कंपनी का शेयर खरीदते हैं तो आप उस कंपनी के आंशिक मालिक हो जाते हैं। और, मालिक अपनी कंपनी की खरीद-बिक्री रोज नहीं करता। जैसे, मैं नहीं चाहूंगा कि नारनोलिया सिक्युरिटीज का रोजाना बाजार-भाव देखूँ और जिस दिन भाव बढ़ गया उस दिन शेयर बेच दूँ या खरीद लूँ! देखिये, ओर हमेशा लॉन्ग टर्म को सोचता है। इसलिये, मैं कहता हूँ कि रोजाना शेयरों की खरीद-बिक्री करना जुआरी की मानसिकता है, न कि निवेशक की। और, जब किसी को मानसिकता जुआरी की होगी तो उसका हश्र भी जुआरियों जैसा ही होगा ना! अब, इसके लिए शेयर बाजार को दोषी करार नहीं दिया जा सकता। जैसे, क्रिकेट मैच पर सटोरिये भी दांव लगाते हैं, इसका मतलब यह तो नहीं कि हम क्रिकेट में दोष निकालें।

लेकिन, आम आदमी क्या करे। वह तो किसी शेयर दलाल अथवा सलाहकार के माध्यम से ही निवेश करता है। और, बाजासा उसके लिए उन्हें सर्विस चार्ज देता है। फिर, खतरा क्यों?

देखिये, इसके पीछे, कुछ तो उन ब्रोकर, एडवाइजरों में जानकारी की कमी के कारण होता है और दूसरा, वे बिचौलिये ग्राहक के फायदे की बजाय अपना कंधा चमकाने में जुटे हैं। वे जितनी खरीद-बिक्री करेंगे, उन्हीं उतनी ही ज्यादा दलाली मिलेगी। आप जानते होंगे कि दुनिया के सबसे धनी व्यक्ति वारेन बफेट विख्यात ब्रोकर हैं। बफेट का कहना है कि किसी निवेशक को पूरे जीवन में सिर्फ बीस बार खरीद-बिक्री करनी चाहिए। जबकि, हमारे यहां के निवेशक बीस बार खरीद-बिक्री हर रोज करते हैं! इसका सीधा लाभ, उन कथित एडवाइजरों को मिलता है। हर ट्रान्ज़ेक्शन पर उन्हें कमोशन जो मिलता है! इसलिये मैं कहूंगा कि निवेशक जबतक खुद शेयर के इस धंधे में जानकार नहीं हो, वह इससे दूर ही रहे। आपको बताऊँ कि शेयर बाजार पूरी दुनिया में अकेला ऐसा व्यवसाय है जिसने सबसे ज्यादा करोड़पति पैदा किये हैं और सबसे ज्यादा दिवालिया भी इसी की देन हैं। इसलिये, मैं तो कहूंगा कि अन्य विकसित देशों की तरह अपने देश में भी निवेश का पाठ स्कूल-कॉलेजों में ही पढ़ाया जाना चाहिए। इसी जरूरत को ध्यान में रखकर हमने अपनी इस कंपनी की शुरुआत की थी। हमने सैकड़ों कॉन्फ्रेंस आयोजित किये। बाजासा हमने नारनोलिया नॉलेज सेंटर बनाया, जिसमें हम अपने ग्राहकों को नि:शुल्क प्रशिक्षण देते हैं।

लेकिन, एक बात साफ नहीं हो रही है। एक तरफ आप कहते हैं,

..इसलिए, मैं कहता हूँ कि रोजाना शेयरों की खरीद-बिक्री करना जुआरी की मानसिकता है, न कि निवेशक की। और, जब किसी की मानसिकता जुआरी की होगी तो उसका हश्र भी जुआरियों जैसा ही होगा ना!

निवेशकों में जानकारी का अभाव है और दूसरी तरफ हम देख रहे हैं कि निवेशक बढ़ते जा रहे हैं?

लेकिन, यह बढ़ती लोपसाइडेड (असंतुलित) है। मेरे विचार से, आज भी शेयर बाजार के टर्नओवर में 90 प्रतिशत धंधा स्पेकुलेशन (सट्टेबाजी या अटकलबाजी) का है। मैं ऐसा नहीं कहता कि दूसरे देशों में स्पेकुलेशन का धंधा नहीं होता। अमेरिका में भी होता है, लेकिन वहां इसका प्रतिशत मात्र 35 है। हमारे यहां लोगों को इन्वेस्टमेंट के बारे में बहुत कम जानकारी है। आम आदमी ही नहीं, कथित शिक्षित लोग भी नहीं जानते, चाहे चार्टर्ड

एकाउंटेंट हों, एमबीए हों या आईएएस। ये लोग भी निवेश का गुर नहीं जानते। हां, उनके बच्चे टीवी देखकर और मार्केट में जाकर कंजम्पशन

विख्यात शेयर ब्रोकर वारेन बफेट का कहना है कि किसी निवेशक को पूरे जीवन में सिर्फ बीस बार खरीद-बिक्री करनी चाहिए। जबकि, हमारे यहां के निवेशक बीस बार खरीद-बिक्री हर रोज करते हैं!

(उपभोक्तावाद) के एक्सपर्ट जरूर हो गए। क्या-क्या खरीदना चाहिए उनको मालूम है। लेकिन, अतिरिक्त कमाई आये कैसे, उसके बारे में उनको जानकारी नहीं है। अमेरिका जैसे विकसित देशों में बचत का 60 फीसदी हिस्सा इक्विटी में जाता है। फिक्स्ड डिपॉजिट वगैरह में मात्र 20 प्रतिशत निवेश होता है। जबकि, भारत में अधिकतर फंड एफडी में जाता है। इक्विटी में निवेश दस साल में दो प्रतिशत से बढ़कर मात्र चार प्रतिशत हो पाया है। अबतक आपको बातों से यह तो स्पष्ट में आ गया कि शेयर बाजार में निवेश किया है तो तुरत-फुरत में खरीद-बिक्री नहीं करनी चाहिए। अब

कौन हैं नारनोलिया!

पूरा नाम - कृष्णानंद नारनोलिया (चेयरमैन-कम-मैनेजिंग डायरेक्टर, नारनोलिया सिक्युरिटीज लिमिटेड) निवासी - जामनाडा, झारखंड (मूल निवासी - नारनोला, हरियाणा) परिवार का मूल व्यवसाय - बिल्डिंग मैटेरियल (सिमेंट, रॉड, आदि) का व्यापार



शैक्षिक योग्यता - रांची युनिवर्सिटी (मारवाड़ी कॉलेज) से ग्रेजुएशन, अंतर्राष्ट्रीय संस्थान 'मेम्स' से एमबीए, गोल्ड मेडलिस्ट पेशे की शुरुआत - 1994 में, मगध स्टॉक एक्सचेंज में असिस्टेंट ब्रोकर

नारनोलिया सिक्युरिटीज का प्रोफाइल :- स्थापना - 1 मई 1997 शाखाएं - झारखंड, बिहार बंगाल में 172 ब्रांचें व क्लायंट्स (ग्राहक) - वर्तमान में 50 हजार टर्नओवर - 15 हजार करोड़ रूपए सालाना।

यह बताएं कि आम आदमी, या छोटे निवेशक को किन हालातों में अपने शेयर बेचना या खरीदना चाहिए?

देखिये, कोई नया निवेशक है तो सबसे पहले उसे किसी सही कंपनी के शेयर पर पैसा लगाना चाहिए। शेयरों की खरीद के लिए मैं एक उदाहरण देना चाहूंगा। मान लीजिए, रिबॉक के जूतों की सेल लगी हो। हम क्या करते हैं? इस मौके का फायदा उठाते हुए सेल में खरीदारी कर लेते हैं। यही फॉर्मूला हमें शेयरों की खरीद पर लागू करनी चाहिए। जिस समय किसी अच्छी कंपनी के शेयर के दाम काफी घटे हों तो हमें उसके शेयर खरीदने चाहिए। और जब दाम काफी बढ़े हुए हों तभी कुछ शेयर बेचने चाहिए। जबकि, लोग इसका उल्टा करते हैं। जब नीचे का भाव आता है तो उनमें बेचने की प्रवृत्ति होती है और भाव ऊपर होता है तो वह पड़ोसी को देखकर, क्यों वह कमा चुके हैं, खरीदने की इच्छा होती है।

अब आम आदमी का एक बुनियादी सवाल। एक छोटा निवेशक, जैसे वेतनभोगी या छोटा व्यवसायी को किस हद तक शेयर बाजार में निवेश करना चाहिए?

यह निर्भर करता है निवेश की इच्छा रखने वाले व्यक्ति की स्थिति और जरूरत पर। एक वेतनभोगी अगर अपनी बेटी की शादी के लिए पैसा जमा कर रहा है और एक साल के बाद उसे पैसे की जरूरत पड़ सकती है, तो उसे शेयर बाजार में कतई इन्वेस्ट नहीं करना चाहिए। क्योंकि शेयर बाजार का नियम है कि यह अपने फेयर वैल्यू पर टिका नहीं रहता है। 30 प्रतिशत ऊपर या नीचे चलता है। हो सकता है, जिस समय उस व्यक्ति को पैसे की जरूरत हो, बाजार नीचे चल रहा हो। यह समय खरीददारी का होगा। लेकिन, बेटी की शादी करनी है तो वह व्यक्ति अपने शेयर बेचने पर मजबूर हो जाएगा। इसलिये, मैं कहूंगा कि किसी निवेशक का तीन साल के भीतर कोई आंशिकगेशन (देनदारी) है तो उसे इक्विटी में निवेश नहीं करना चाहिए। वह उस पैसे को डिबेंचर या एफडी में निवेश करे।

यह 'तीन साल' का फॉर्मूला क्या है? अनुभवों के आधार पर माना जाता है कि कोई भी शेयर तीन साल तक अपने फेयर वैल्यू से नीचे नहीं रहता। बाजार में दाम गिरते ही कुछ पेशेवर या विदेशी निवेशक निवेश शुरू कर देते हैं। और कौमत् लगभग फेयर वैल्यू के आसपास आ जाएगा। जैसा, अभी

कुछ वक्त पहले इन्डेक्स 14 हजार तक गिर गया था। लेकिन अब, वापस 16,900 के फेयर वैल्यू पर पहुंच चुका है।

यानी आपकी सलाह है कि निवेशक अपनी सेविंग्स का वही हिस्सा शेयर बाजार में निवेश करें, जिसकी जरूरत अगले तीन साल तक नहीं हो? लेकिन, एक सवाल है- आखिर छोटा निवेशक शेयर बाजार में निवेश का खतरा ही क्यों उठाये?

देखिये, अभी भले ना हो, लेकिन आनेवाले दिनों में इक्विटी में निवेश आम लोगों की बाध्यता नहीं, अनिवार्यता होगी। नौकरपेशा या मिडिल क्लास की आय में सीमित बढ़ोतरी होती है। लेकिन, खर्च का पहलू देखें- पहले लोग जरूरत के अनुसार खरीदारी करते थे, लेकिन अब इच्छा के अनुसार करते हैं। मॉलकल्चर, टीवी कल्चर जबरदस्त प्रभाव डाल रहे हैं। घर के छोटे बच्चे तक की भूमिका निर्णायक होती है। और जैसे-जैसे कन्ज्यूमरिज्म बढ़ेगा, ये इच्छाएं जरूरत बनती जाएंगी। जाहिर है, गंभीर सवाल उठेगा- सीमित आय और बेतहाशा खर्च के अंतर को कैसे पाटा जाए? उस वक्त एक ही विकल्प है कि आप अपनी बचत को ऐसी जगह निवेश करें जहां उसमें त्वरित गुणात्मक वृद्धि होने लगे। फिक्स्ड डिपॉजिट में मिलनेवाला इंटरैस्ट रेट घटता जा रहा है। कभी 12 प्रतिशत था, अब 8-9 प्रतिशत हो गया और आनेवाले दिनों में 5 प्रतिशत तक हो जाएगा। यानी, अब आप को सेविंग्स को इक्विटी में लगाना ही होगा।

एक आम निवेशक के लिए शेयर बाजार की अनिवार्यता पर आप काफी जोर दे रहे हैं। इसका आधार क्या है?

यह सब मैं नहीं, आंकड़े बोल रहे हैं। पिछले तीन दशक के आंकड़ों पर गौर कीजिए। भारत में सेंसेक्स शुरू हुआ 1997 में। तब इंडेक्स मात्र 100 था। 29 सालों में यह बढ़कर 16,000 पहुंच गया है। इसी पीरियड में देखें तो एफडी का रिटर्न औसतन 9.5 प्रतिशत पहुंच गया। और, मुद्रा-स्फीति करीब 7.68 प्रतिशत रही है। इसका मतलब यह हुआ कि एफडी के एक निवेशक ने पिछले 29 साल में लगभग 2 प्रतिशत की कमाई की। अगर, इस निवेशक ने इक्विटी में निवेश किया होता तो काफी फायदे में रहता। इस 29 साल में शेयर बाजार में लगभग 19 प्रतिशत की वृद्धि हो गई। जबकि, इस अवधि में शेयर मार्केट में 17 साल गंभीर गिरावट दर्ज हुई और मात्र 12 साल ही मार्केट में पॉजिटिव ग्रोथ रहा। अब, इस 19 प्रतिशत की वृद्धि से सात प्रतिशत मुद्रा-स्फीति भी घटा दें तो भी निवेशकों को इक्विटी में 12 प्रतिशत तक की कमाई हुई।

यह तो बातें हुई छोटे निवेशकों की, छोटे व्यावसायी और वेतनभोगियों की। पेशेवर निवेशकों पर इसका क्या प्रभाव पड़ सकता है?

हमलोगों का आकलन है कि आनेवाले दिनों में कुछ बड़े व्यावसायिक घराने और तेजी से विकसित होंगे लेकिन छोटे व्यापारियों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे लोगों को अभी से सचेत होकर बड़ी कंपनियों की इक्विटी में हिस्सेदार हो जाना चाहिए। तभी उन बड़ी कंपनियों के विकास के साथ उनका विकास भी जारी रह पायेगा। यानी, दूसरे लहजे में कहें तो बाजार में टिके रहने के लिए अपनी कंपनी के अलावा कई कंपनियों में हिस्सेदारी होना अनिवार्य हो जाएगा।

एक अच्छे निवेशक के लिए क्या कुछ होना जरूरी है?

निवेश में मुनाफा के लिए तीन महत्वपूर्ण शर्तें हैं। पहली यह कि आप अपने उन सेविंग्स का ही निवेश में प्रयोग करें जो पूरी तरह ब्याजमुक्त हो। कई बार देखा गया है कि लोग जब शेयरबाजार में कुछ अंदर पहुंच जाते हैं तो ब्याज पर कर्ज लेकर निवेश करने लगते हैं। यह आर्थिक सुरक्षा की दृष्टि से बेहद जोखिम भरा प्रयोग होता है। इससे बचना चाहिए। दूसरा, जिस तरह आप फिक्स्ड डिपॉजिट में पैसा लगाकर कुछ अर्बि, तीन साल, पांच साल आदि, के लिए भूल जाते थे, उसी तरह शेयर बाजार में भी धैर्य रखना होगा। और तीसरी शर्त है- कन्विकशन यानी दृढ़निश्चय। जिस तरह, जब आप कोई पैसा लगाते हैं तो उसमें खाद-पादानी नियमित देते हैं, न कि हर रोज उस पौधे को जड़ खोदकर देखेंगे कि वह कितना बढ़ा है।

अक्सर हम सुनते हैं कि किसी खास खबर या घटना, चाहे वह राजनीतिक हो, भूभंडलीय हो अथवा कोई बड़ी प्राकृतिक विपदा, का प्रभाव तुरंत स्टॉक मार्केट पर पड़ता है। कभी शेयर के भाव बहराकर गिरने लगते हैं अथवा आकाश चूमने लगते हैं। इस परिवर्तन की क्या केमिस्ट्री है?

रिबॉक के जूतों की सेल लगी हो। हम क्या करते हैं? इस मौके का फायदा उठाते हुए सेल में खरीदारी कर लेते हैं। यही फॉर्मूला हमें शेयरों की खरीद पर लागू करनी चाहिए। जिस समय किसी अच्छी कंपनी के शेयर के दाम काफी घटे हों तो हमें वह शेयर खरीदने चाहिए। और जब दाम काफी बढ़े हुए हों तभी कुछ शेयर बेचना चाहिए।

सामान्य तौर पर कोई घटना या खबर किसी कंपनी के इनकम को प्रभावित करने वाली होती है तभी ऐसा होता है। जैसे सरकारी बजट में किसी खास वस्तु पर विशेष तवज्जो दी जाती है तो उस वस्तु की उत्पादनकर्ता कंपनी की आय क्षमता को यह निर्णय प्रभावित करता है। कई बार राजनीतिक समीकरण और भिन्न राजनीतिक दलों की नीति को लेकर भी शेयर बाजार में उथल-पुथल संभव है। उसके पीछे भी भिन्न कंपनियों की आय का प्रभावित होना ही कारण होता है। लेकिन, कई बार कौव्या कान लेने वाली कहावत भी सच होते दिखाती है। इसके पीछे कारण होते हैं वही शॉर्ट टर्म इन्वेस्टर्स जो सट्टेबाजी करते हैं। ये लोग गिरते ही खरीदते हैं, लिक्विडिटी, सेंटीमेंट और घटना से। चूंकि उन्होंने ब्याज पर धन लेकर शेयर में लगा रखा है। कोई ऐसी खबर आती है तो यथार्थ की समीक्षा किये बिना, वह भावुकतावश अफरा-तफरी में अपने शेयर बेचने लगते हैं। यहाँ तक कि कंपनियों के फेयरवैल्यू और आधारभूत नीतियां को भी नजरंदाज कर देते हैं। और तबतक उस कंपनी के शेयर को बेचते जाएंगे, जब तक वह अपनी अधिकांश देनदारियों से मुक्त न हो जाएं। इसमें उन्हें कई बार भारी घाटा उठाना पड़ता। और, उस वक्त आप पायेंगे कि स्टॉक मार्केट में बेवजह गिरावट आ गई।

ल्लोबल सिनेरियो में भारतीय शेयर मार्केट का क्या स्थान आप देखते हैं? देखिए, हाल के दिनों में अमेरिका सहित कई विकसित देशों के निवेशक भारत में काफी पैसा लगा रहे हैं। झारखंड, बिहार जैसे छोटे प्रदेशों की कौसी हिस्सेदारी है शेयर बाजार में?

अभी को आंकड़ा मिला है उसके अनुसार अभी

अवधारणा की बदौलत हूँ। भारत के हर्षद मेहता और अमेरिका के वारेन बफेट के बारे में आप क्या कहेंगे?

हर्षद मेहता भारतीय शेयर बाजार के जुआरियों की मानसिकता को दबोच लेने वाला एक बड़ा सटोरिया था। वह सटोरियों-जुआरियों का बादशाह था। और वारेन बफेट विशुद्ध निवेशकों के बादशाह हैं। इन दोनों का अंजाम अलग-अलग हुआ। हर्षद मेहता को जान देनी पड़ी और बफेट दुनिया के सबसे धनी व्यक्ति बन गए हैं।

हर्षद मेहता भारतीय शेयर बाजार के जुआरियों की मानसिकता को दबोच लेने वाला एक बड़ा सटोरिया था। वह सटोरियों-जुआरियों का बादशाह था। और वारेन बफेट विशुद्ध निवेशकों के बादशाह हैं। इन दोनों का अंजाम अलग-अलग हुआ। हर्षद मेहता को जान देनी पड़ी और बफेट दुनिया के सबसे धनी व्यक्ति बन गए हैं।

हर्षद मेहता भारतीय शेयर बाजार के जुआरियों की मानसिकता को दबोच लेने वाला एक बड़ा सटोरिया था। वह सटोरियों-जुआरियों का बादशाह था। और वारेन बफेट विशुद्ध निवेशकों के बादशाह हैं। इन दोनों का अंजाम अलग-अलग हुआ। हर्षद मेहता को जान देनी पड़ी और बफेट दुनिया के सबसे धनी व्यक्ति बन गए हैं।